Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

हिंदी साहित्य और जलवायु परिवर्तन

लीना गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी

प्रकृति अपने आप में सुंदर है और मानव स्वभाव से ही सौंदर्य प्रेमी माना गया है। इसी कारण प्रकृति और मानव का संबंध उतना ही पुराना है जितना कि इस सृष्टि के आरंभ का इतिहास । सृष्टि पृथ्वी जल, वायु, अग्नि और आकाश पांच तत्वों से मिलकर बनी है। ऐसा माना गया है कि साहित्य सृजन की प्रेरणा व्यक्ति को प्रकृति के रहस्यमई कार्यों एवं गतिविधियों को देखकर ही प्राप्त हो सकी थी। इस तथ्य में तनिक भी संदेह नहीं है कि अपने आरंभ काल में मानव की सहचरी और आश्रयदायी सभी कुछ एकमात्र प्रकृति ही थी।इसलिए मनुष्य ने प्रकृति के विभिन्न अंगों को चांद, सूरज, पशु, आकाश, मिट्टी, पक्षी जैसे जीवों में भी देवताओं के दर्शन किए। आज भी हम इसके कई रूपों की पूजा अर्चना करते हैं।

इसका अर्थ है कि मानव का प्रकृति के साथ संबंध चिरंतन एवं शाश्वत है। इसी कारण मानव जीवन की महान उपलब्धि, साहित्य एवं प्रकृति का संबंध भी अनादि एवं शाश्वत है। सभी जानते हैं कि प्रकृति के दो रूप हैं कोमल एवं भयानक यह दोनों स्वरूप प्रत्येक मानव विशेष कर साहित्यकार कोटि के मानव के लिए आरंभ से ही भावना का संबल प्रदान करते आ रहे है और प्रकृति अपने सगुण साकार स्वरूप एवं चेतना में आरंभ से ही साहित्यकार के मन मस्तिष्क पर प्रभावी रही है। प्रत्येक युग में साहित्यकार ने किसी न किसी रूप में प्रकृति का दामन अवश्य ही थामा है और हमारे इस वेबीनार का विषय जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन भी साहित्यकारों से अछूता नहीं है। उन्होंने इस विषय में कहा है किजलवायु किसी स्थान के लंबे समय की मौसमी घटनाओं का औसतन होती है। पृथ्वी की जलवायु सथैतिक नहीं है। मौसम तथा जलवायु में प्राकृतिक कारणों से स्थानीय,प्रादेशिक एवं वैश्विक स्तर पर परिवर्तन होते रहते हैं। परंतु औद्योगिक क्रांति के बाद विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विकास के कारण मानव द्वारा वायुमंडलीय प्रक्रमो में तीव्र गति से परिवर्तन होने लगा है क्योंकि मनुष्य अब वायुमंडलीय सघटको की मौलिक सरचना में परिवर्तन तथा परिमार्जन करने में समर्थ हो गया है। इसका असर मानव समुदाय, वनस्पति एवं जंतुओं पर पड़ने लगा है। खासकर मानव जाति के स्वयं का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। जलवायु में हुआ यह परिवर्तन ही जलवायु परिवर्तन कहलाता है आज जिस जलवायु परिवर्तन की बात होती है उसका अर्थ 100 साल पहले मानव गतिविधियों द्वारा हुए जलवायु परिवर्तन से है जलवायु परिवर्तन का भौगोलिक अभिप्राय मौसमी प्रतिरूप में लंबे समय तक के परिवर्तन से है।

जलवायु परिवर्तन, सामान्यत: तापमान, वर्षा, हिम एवं पवन प्रतिरूप में आए एक बड़े परिवर्तन द्वारा मापा जाता है जो कई वर्षों से होता है। मनुष्य द्वारा जीवाश्म इंधन जैसे कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस की बड़ी मात्रा में जलाए जाने निर्वनीकरण अर्थात जिससे वनो की कार्बन अवशोषण की क्षमता घटती है एवं उससे संचित कार्बन वायुमंडल में निरमुक्त होने लगता है आदि से जलवायु परिवर्तन हो रहा है।

पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर अब तक जलवायु में अनेक बार परिवर्तन हुए हैं। पृथ्वी के विगतकालों में हुए जलवायु परिवर्तन के साक्ष्यों को जलवायु परिवर्तन के संकेतक कहते हैं। पृथ्वी पर जीवन की दशाएं पर्यावरण के प्रभाव एवं परिवर्तन से संचालित एवं प्रभावित होती हैं। पर्यावरण जीव-जंतुओं पेड़, पौधों एवं सूक्ष्मजीवों आदि की प्रकृति एवं स्वभाव को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रत्येक जीव अपने विशिष्ट परिवेश में रहता है। जीव एवं उसका परिवेश एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। किसी जीव का यही परिवेश पर्यावरण संरक्षण आता है। जलवायु एवं पर्यावरण के अंतर्गत जैविक घटक, अजैविक घटक एवं ऊर्जा सघटक आते हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारणों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है; प्राकृतिक और मानवीय जलवायु परिवर्तन के प्राकृतिक कारणों में ज्वालामुखी, महासागरीय घटनाओं महाद्वीपों के अलगाववादी प्रमुख हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण पूरी दुनिया पर आपदाओं के बादल मंडरा रहे हैं। साल 2019 दूसरा सबसे गर्म वर्ष रिकॉर्ड किया गया है। वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और ग्रीन हाउस गैसों का स्तर 2019 में नए रिकॉर्ड तक पहुंच गया। बाढ़, सूखा,झुलसाने वाली लू, जंगल में आग और क्षेत्रीय चक्रवातो की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। जलवायु परिवर्तन के कारण दुनियाभर में समुन्दर का जलस्तर बढ़ रहा है। ग्रीनलैंड और अंटार्टिका में जमी बर्फ के पिघलने की दर बढ़ती जा रही है जिससे समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। वर्ष 2019 जुलाई के अंत में आए लू के थपेड़ों से मध्य और पश्चिमी यूरोप का अधिकांश भाग प्रभावित हुआ । इस दौरान नीदरलैंड में 2964 मौते लू से जुड़ी पाई गई जो कि गर्मी के सप्ताह में औसतन होने वाली मौतों की तुलना में लगभग 400 अधिक थी।

लंबे समय तक तापमानअधिक रहने के कारण मौसम के स्वभाव में बदलाव आ रहा है जिसके चलते प्रकृति में मौजूद सामान्य संतुलन की स्थिति बिगड़ती जा रही है। इससे मनुष्यों के साथ ही पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है।

आपदा प्राय: एक अनपेक्षित घटना होती है जो मानव के नियंत्रण से बाहर तथा प्राकृतिक व मानवीय कारणों द्वारा घटित होती है। यह अल्प समय में बिना चेतावनी से घटित होती है जिससे मानव जीवन की क्रियाएं अवरुद्ध हो जाती हैं और व्यापक तौर पर जानमाल की हानि होती है। द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने अपने तीसरी रिपोर्ट में आपदा के लिए डिजास्टर के स्थान पर क्राइसिस शब्द प्रयुक्त किया है। यह वह प्रतिकूल स्थिति है जो मानवीय भौतिक पर्यावरणीय है एवं सामाजिक क्रियाकलाप को व्यापक तौर पर प्रभावित करती है। आपदा व प्राकृतिक संकट दो अलग-अलग शब्द हैं, किंतु यह दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं। प्राकृतिक संकट पर्यावरण के परिपेक्ष्य में वह कारक है जिसके द्वारा जन धन या दोनों का नुकसान होता है। यह संकट बहुत तीव्र हो सकते हैं या पर्यावरण विशेष के स्थाई पक्ष हो सकते हैं। जैसे पर्वतीय क्षेत्रों में तीव्र ढाल, रेगिस्तान या हिमाच्छादित क्षेत्रों की विषम दशाएं आदि प्राकृतिक संकट की तुलना में प्राकृतिक आपदाएं अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता से घटित होती हैं तथा व्यापक पैमाने पर जनधन की हानि के साथ सामाजिक तंत्र एवं जीवन को छिन्न-भिन्न कर देती हैं।

आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के अनुसार आपदा से तात्पर्य किसी क्षेत्र में हुए उस विध्वंस,

अनिष्ठ, विपत्ति या बेहद गंभीर घटना से है जो प्राकृतिक या मानव जनित कारणों से या दुर्घटनावस या लापरवाही से घटित होती हैं और जिस में बहुत बड़ी मात्रा में मानव जीवन की हानि होती है या मानव पीड़ित होता है या संपत्ति की हानि पहुंचती है या पर्यावरण का भारी क्षरण होता है। संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय आपदा शमन रणनीति UNISDR के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के मामले में चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। भारत में आपदाओं की रूपरेखा मुख्यत: जलवायु स्थितियों और स्थलाकृतियों की विशेषताओं से निर्धारित होती है। उन्हीं के फल स्वरुप विभिन्न तीव्रता की आपदाएं वार्षिक रूप से घटित होती हैं। आवृत्ति, प्रभाव व अनिश्चितताओ के हिसाब से जलवायु प्रेरित आपदाओं का स्थान सबसे ऊपर है।

भारत के भू भाग का लगभग 60% क्षेत्र भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है। हिमालयी क्षेत्र, पूर्वोत्तर,गुजरात के कुछ क्षेत्र,अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंपीय दृष्टि से सबसे सक्रिय क्षेत्र हैं। देश के 68% भाग में कभी हल्का तो कभी भीषण सूखा पड़ता है। भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्यों के मुख्य तत्व अर्ध शुष्क और कम नमी वाले क्षेत्र सूखे से प्रभावित रहते हैं। देश में 40 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में बार-बार बाढ़ आती है। देश के सभी नदी घाटी क्षेत्रों में बाढ़ का प्रकोप रहता है। किंतु उत्तर प्रदेश,बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा असम के क्षेत्रों में प्रति वर्ष बाढ़ आती है तथा चक्रवात का खतरा बना रहता है जिससे देश को बहुत हानि उठानी पड़ती है।

अंत में हम कह सकते हैं कि भौतिक,आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय जोखिम जलवायु परिवर्तन के जोखिम के साथ संलग्न होकर यह खतरे बड़ी आपदाओं में परिवर्तित होते जा रहे हैं जिससे जन धन की भारी हानि होती जा रही है। अत: वर्तमान युग में अधिकांश विकासशील देशों को इसके लिए उचित कदम उठाने होंगे ताकि आने वाली पीढ़ियों का जीवन सुरक्षित हो सके।साहित्यकारों के अनुसार हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि प्रकृति के महत्व को युग में कम नहीं आंका जा सकता मनुष्य प्रकृति से ना तो अलग हुआ है और ना ही हो सकता है प्रकृति के बिना मनुष्य जीवन ही नहीं रह सकता इसलिए अब यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हमें प्रकृति की सुरक्षा करनी चाहिए

संदर्भ सूची

भारत की आंतरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन, अमन कुमार उदय भान सिंह, पृष्ठ 79.

*पर्यावरणीय पारिस्थितिक जैव विविधता,*जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन, रविअग्रहरि पृष्ठ 129.

पर्यावरण पारिस्थितिकी एवं आपदा प्रबंधन, संजीव शर्मा, पृष्ठ 112.